G5P1Q8

6 सुबह

पोलियो की बीमारी से बच्चे विकलांग हो जाते हैं। बच्चों को इस बीमारी से बचाने के लिए उन्हें पोलियो की दवा पिलाई जाती है।

इस सच्ची घटना में पोलियो विकलांग बालिका रेशमा अपनी सूझ-बूझ और साहस से काम लेती है। उसकी शारीरिक कमी उसके इरादों में कभी बाधा नहीं बनी। वह जिंदादिली एवं परिश्रम से अपना जीवन कैसे जी रही है, इसका निरूपण इस घटना में किया गया है।

सुबह-सुबह रेशमा ने देखा कि घर के सभी लोग सफाई में व्यस्त हैं। कोई सामान झाड़ रहा है तो कोई मकड़ी के जाले उतार रहा है। रेशमा ने सोचा - जरूर आज कोई खास बात है।

''माँ, आज कोई खास बात है? सब इतनी सुबह उठकर घर की सफाई में जुटे हैं,'' रेशमा ने उत्सुकता से पूछा। ''हाँ, बिटिया रानी त्योहार के दिन हैं। भूल गई क्या? पहले से ही साफ-सफाई हो जाए तो अच्छी तरह त्योहार का आनंद ले पाएँगे।'' माँ ने प्यार से रेशमा के गाल को सहलाते हुए कहा।

''ओह ! मैं तो एकदम भुलक्कड़ हो गई हूँ। पर माँ, आपने मुझे तो कोई काम सौंपा ही नहीं। मैं क्या करूँ, बताओ माँ !''

''अच्छा चलो, पहले नहा-धोकर तैयार हो जाओ। फिर बताऊँगी बहुत से काम हैं। मैं भी आपकी मदद करना चाहती हूँ।'' माँ ने कहा।

रेशमा ने रुआँसे स्वर में कहा।''मदद तो मैं जरूर लूँगी। मैंने तुम्हारे लिए कई काम सोच रखे हैं। नहा-धोकर नाश्ता कर लो, फिर बताऊँगी,'' कहते-कहते माँ ने रेशमा को उसकी पहिएवाली कुरसी पर बैठा दिया। रेशमा ने अपनी पहिएवाली कुरसी को धीरे-धीरे धकेला और अपने दैनिक कार्यों में लग गई।

रेशमा जब पाँच साल की थी तभी से उसके दोनों पैर काम नहीं करते थे। उसे बहुत तेज बुखार हुआ और घुटनों से नीचे दोनों पाँव एकदम बेजान हो गये। बहुत इलाज करवाया पर रेशमा के पाँवों में जान नहीं आई। उसे पोलियो हो गया था। रेशमा बहुत हिम्मतवाली लड़की थी। शुरू-शुरू में उसे जरूर दूसरों की सहायता लेनी पड़ी। परंतु अब ग्यारह साल की उम्र में वह अपने सारे काम स्वयं करती है। वह अपने परिवार पर अपने काम के लिए निर्भर नहीं रहना चाहती।

परिवार के सभी सदस्य – पिताजी, छोटा भाई गोलू, दादीजी, दादा जी सभी उसे बहुत प्यार करते हैं। वह सबकी आँखो का तारा है।

माँ ने रसोई घर में सारे बरतन, डिब्बे, बोतलें नीचे उतारकर साफ कर दिए थे। उन्होंने रेशमा को आवाज़ दी, ''रेशू ! अगर तुमने नाश्ता कर लिया हो तो काम में मेरा हाथ बँटाओ।''

''हाँ माँ ! मैंने नाश्ता कर लिया। दूध का मेवेवाला दलिया बहुत अच्छा बना है। माँ मैं हाथ धोकर अभी आती हूँ।'' रेशमा अपनी कुरसी को धकेलते हुए रसोईघर में पहुँची। रेशमा माँ को बरतन, डिब्बों पर लेबल लगा-लगाकर पकड़ाती गई और माँ उन्हें व्यवस्थित ढंग से सजाती गई। रसोईघर फिर से चमचमाने लगा।

पिताजी दफतर चले गए। माँ को लड्डू बनाने के लिए कुछ जरूरी सामान चाहिए था। गोलू तो बहुत छोटा है। दादी जी, दादाजी बहुत बुजुर्ग हैं। अब सामान लाए कौन ? माँ परेशान थीं। रेशमा ने कहा-सामान मैं ले आऊँगी।

बस आप मुझे सामान की लिस्ट और एक थैला दे दीजिए।

''तुम ले आओगी अकेली ?'' माँ ने पूछा। ''हाँ माँ ! एक बार पहले भी तो लाई थी।'' रेशमा की आवाज़ में दृढ़ता थी।

''तो ठीक है, तुम्ही ही ले आओ, लेकिन ध्यान से जाना। सारा सामान नुक्कड़वाली दुकान से ही मिल जाएगा।''

थोड़ी देर बाद रेशमा सारा सामान लेकर लौटी। उसने गोलू को आवाज़ दी ''गोलू ! ये लो तुम्हारे लिए टॉफी लाई हूँ।''

गोलू टॉफी पाकर खुशी से उछलने लगा ! कुछ ही दिन बीते थे। एक दिन शाम को रेशमा का घर दियों के झिलमिल प्रकाश से जगमगाने लगा। पूरा मोहल्ला जगमगा रहा था। जहाँ रोशनी ही रोशनी थी। क्या ज़मीन क्या आसमान ! दादी जी ने बताया कि दीपावली अँधेरे पर उजाले की जीत का त्योहार है। बुराई पर अच्छाई और असत्य पर सत्य की सदा जीत होती है।

इस दिन रावण को पराजित कर राम अयोध्या लौटे थे। उसी खुशी में यह त्योहार मनाया जाता है। रेशमा और गोलू बड़े ध्यान से दादीजी की बातें सुन रहे थे। कुछ देर बाद सबने मिलकर पूजा की और प्रसाद खाया। गोलू अपने दोस्तों के साथ पटाखे छुड़ाने में मग्न हो गया। रेशमा अपने दादा-दादी के साथ फुलझड़ियाँ जला रही थी। इतने में रेशमा ने क्या देखा कि गोलू ने जिस पटाखे को बुझा हुआ समझकर छोड़ दिया था, उसमें से चिनगारियाँ निकलने लगी हैं। गोलू की पीठ पटाखे की तरफ थी। रेशमा चिल्लाई, ''गोलू-गोलू बचो ! तुम्हारे पीछे पटाखा है।''

पटाखों के शोर में रेशमा की आवाज़ दब गई। बाकी लोग कुछ समझ पाते, सबसे पहले रेशमा जल्दी-जल्दी कुरसी को धकेलती गोलू के पास जा पहुँची। उसने गोलू को जोर से धक्का दिया और खुद आगे निकल गई – अपनी कुरसी की गति के कारण। धड़ाम ! ज़ोर का धमाका हुआ। रेशमा की फुर्ती ने गोलू को ज़लने से बचा लिया। गोलू को कुछ समझ न आया कि उसे धक्का किसने दिया और क्यों ?

धमाके की आवाज़ सुनकर माँ-पिताजी भी बाहर दौडे

चले आए। कुरसी रेशमा के ऊपर थी और रेशमा नीचे। पिता जी ने कुरसी सीधी की और रेशमा को उस पर बैठा दिया। माँ भयभीत थीं। बोली, ''कहीं चोट तो नहीं लगी, रेशू !'' रेशमा ने उन्हें सारी बात बताई। सबने रेशमा की पीठ थपथपाई। गोलू रेशमा के पास आकर नाटकीय ढंग से बोला, ''दीदी, आज तो आपने मेरी जान बचा ली। आपका यह धमाकेदार धक्का मुझे हमेशा याद रहेगा।'' सभी लोग खिलखिलाकर हँस पड़े। रेशमा की शारीरिक कमी उसके इरादों में कभी बाधा नहीं बनी। वह आज भी उतनी ही जिंदादिली और परिश्रम से अपना जीवन जी रही है। उसकी हर सुबह नई सुबह होती है। वह हर सुबह अपने काम में, नए इरादे से जुट जाती है।

शब्दार्थ

व्यस्त काम में लगा हुआ **व्यवस्थित** ढंग से, तरीके से **उत्सुकता** तीव्र इच्छा **बुजुर्ग** बड़े-बूढ़े **त्योहार** पर्व, उत्सव **दृढ़ता** मज़बूती, दृढ़ होने का भाव **दैनिक** रोजाना, प्रतिदिन **बेजान** बिना जान के, निर्जीव, जिन में हरकत न हो **बाधा** रुकावट **जिंदादिली** खुशमिजाजी, विनोदप्रियता।

मुहावरे

आँखों का तारा होना बहुत प्यारा होना **हाथ बँटाना** काम में मदद करना **पीठ थपथपाना** शाबाशी देना

अभ्यास

1. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

उदाहरण : मंडराना – आकाश में काले-काले बादल मंडराने लगे।

(1) बाधा (2) उत्सुकता (3) दृढ़ता (4) बुजुर्ग (5) व्यस्त

2. (अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) ''दीदी, आपका यह धमाकेदार धक्का मुझे हमेशा याद रहेगा।'' – गोलू ने रेशमा से ऐसा क्यों कहा ?

(2) रेशमा की शारीरिक कमी उसके इरादों में कभी बाधा नहीं बनी – भाव समझाइए।

(ब) यदि आपकी कक्षा में रेशमा की तरह कोई बच्चा दाखिला ले, तो आप...

(1) किन-किन बातों का ध्यान रखेंगे ?

(2) किस तरह उसकी सहायता करेंगे ?

(3) विद्यालय में क्या परिवर्तन करना चाहेंगे ?

(4) बाकी बच्चों को क्या सलाह देंगे ?

3. **सोचकर बताइए :**

(1) दीपावली पर आपके परिवार में क्या-क्या विशेष तैयारियाँ की जाती हैं ?

(2) क्या दीपावली पर पटाखे छुड़ाने चाहिए ? क्यों ?

(3) किसी ऐसी घटना का वर्णन कीजिए जब आपको किसी ने बचाया हो या आपने किसी की सहायता की हो।

स्वाध्याय

1. **प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) सुबह से घर के सभी लोग सफाई क्यों कर रहे थे ?

(2) रेशमा को घर की सफाई में क्यों नहीं लगाया गया होगा ?

(3) रेशमा ने अपनी माँ के काम में किस तरह मदद की ?

(4) माँ ने रेशमा को बाजार क्यों भेजा ?

(5) रेशमा ने गोलू को धक्का क्यों मारा ?

2. **'रेशमा की जिंदादिली' विषय पर संक्षेप में लिखिए।**

3. **नीचे दी गई घटनाओं को कहानी के क्रम में लिखिए -**

(1) सबने रेशमा की पीठ थपथपाई।

(2) रेशमा ने गोलू को जोर से धक्का मारा।

(3) रेशमा बाजार से सामान लाई।

(4) रेशमा का घर दीयों के झिलमिल प्रकाश से जगमगाने लगा।

(5) गोलू अपने दोस्तों के साथ पटाखे छुड़ाने में मस्त था।

(6) माँ ने रेशमा को कहा - ''कहीं चोट तो नहीं लगी ?''

4. **(अ) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :**

(1) आँखों का तारा होना (2) हाथ बँटाना (3) पीठ थपथपाना

5. उदाहरण के अनुसार शब्द का उपयोग करके वाक्य लिखिए :

उदाहरण : कि – की

- उसने कहा कि वह निर्दोष है।
- मैंने नवीन की सहायता की।

(1) इसलिए – ताकि (2) क्योंकि – जबकि

(3) ओर – और (4) मैं – में

6. (अ) नीचे दिए गए वाक्यों का वचन परिवर्तन कीजिए :

उदाहरण :

- माँ को मिलते ही मेरी **खुशी** का ठिकाना न रहा।
- माँ से मिलते ही हमारी **खुशियों** का ठिकाना न रहा।

(1) ऐसी कई घटनाएँ मेरे साथ घटी हैं।

(2) परिचारिका ने मरीज़ की अच्छी तरह से देखभाल की।

(3) रात को मैंने सुंदर सपना देखा।

(4) भूकंप का झटका आया, फिर भी मैं नहीं घबराया।

(ब) नीचे दिए गए शब्दों को चित्र में शब्द के क्रमानुसार लिखिए :

(मेहनत, भूकंप, सुंदर, मरीज, श्रेष्ठ, निर्दोष, तूफ़ान, अंगूर, आकाश)

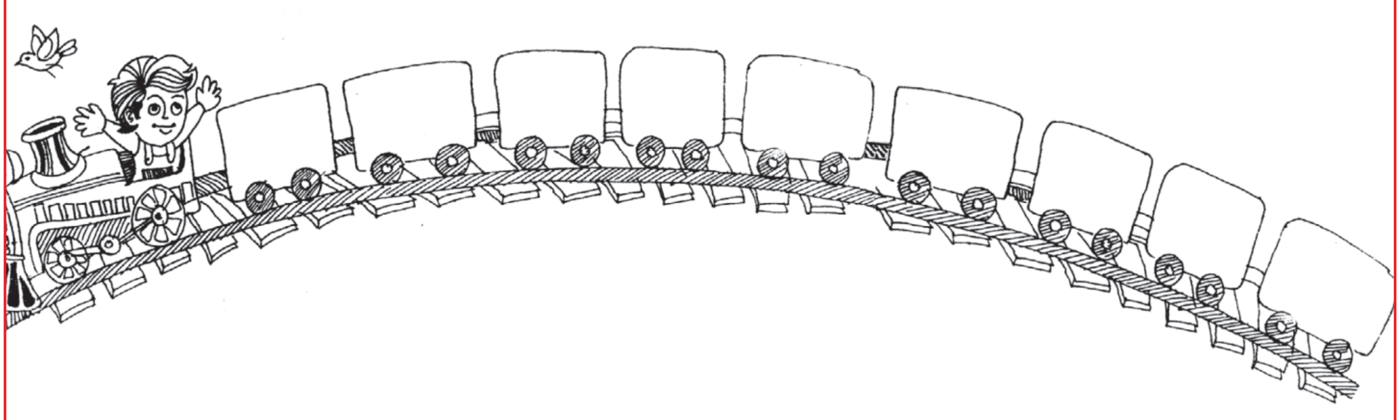

भाषा-सज्जता

यह एक **सुंदर** चित्र है। आसमान में **काले-काले** बादल छाएँ हैं। **कुछ छोटे-बड़े** पेड़ हैं। **ऊँचे** पेड़ पर **सुंदर** फल लगे हैं। नदी में **बहुत-सा** पानी है। पानी में **रंगबिरंगी** मछलियाँ हैं। नदी के पानी में कमल के **तीन सुंदर** फूल हैं। दो नौका में से **एक** नौका किनारे पर पड़ी है। सफेद बकरी **हरी** घास खा रही है। ग्वाला के हाथ में **लम्बी** लाठी है।

उदाहरण : ग्वाले के हाथ में **लाठी** है।

ग्वाले के हाथ में **लम्बी** लाठी है।

यहाँ **लम्बी** शब्द लाठी की विशेषता/गुण सूचित करता है। उसी प्रकार काले-काले, छोटे-छोटे, ऊँचे, सुंदर, बहुत-सा रंगबिरंगी, तीन आदि शब्द किसी न किसी संज्ञा शब्द की विशेषता सूचित करते हैं, इसलिए संज्ञा शब्दों की विशेषता बताने वाले ये शब्द '**विशेषण**' कहलाते हैं।

- **निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण छाँटिए :**

1. रेशमा हिम्मती लड़की है।
2. छोटा बच्चा फिसल गया।
3. कक्षा में दस लड़कियाँ बैठी हैं।
4. उसकी हर सुबह नई सुबह होती है।
5. कुत्ता वफादार प्राणी है।

योग्यता-विस्तार

- **छात्रों के लिए**

- पटाखे न जलाने के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए एक विज्ञापन या पोस्टर बनाइए।
- **यदि पटाखे जलाएँ तो.....**

- पटाखे खुली जगह में **जलाएँ**।
- सूती कपड़े पहनकर ही पटाखे जलाएँ।
- पास में पानी से भरी बाल्टी अवश्य रखें।
- साथ में किसी बड़े का होना जरूरी है।
- तेज़ आवाज़वाले पटाखे न लें।
- जहाँ तक हो फुलझड़ी जैसे पटाखे ही लें।
- कुमारपाल देसाई कृत 'अपंग ना ओजस' पुस्तक पढ़िए।